किया

भारतीय संविधान में १४ सितंबर सन् १९४९ को हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी थी। इस उपलक्ष्य में १४ सितंबर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस का आयोजन किया जाता हैं। एन.आई.टी में हिन्दी के प्रति जागरूकता को बढाने तथा इसके महत्व को दर्शाने के लिऐ हिन्दी सप्ताह उमंग का आयोजन किया जाता हैं। यह एक ऐसा सामारोह है जो संस्थान की बहुसांस्कृतिक़,बहुभाषी जनता को जोडता हैं।

मैराथन,प्रश्नोत्तरी,संसदीय बहस,झंकार,त्वरित सृजनात्मक लेखन,ट्रेजर हंट आदि जैसी कई प्रतियोगितायें प्रतिभागियों की रचनात्मकता को उभारती हैं। न सिर्फ छात्रों बल्कि प्राध्यापकों के लिये भी सुलेख एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता हैं। आगामी वर्षों मे लोगों की भागीदारी एंव उनकें उत्साह में काफी इजाफा हुआ हैं। जो हिन्दी की बढती लोकप्रियता को दर्शाता हैं।

फेस्टेम्बर एन आइ टी तिरुचिरापल्ली का वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव है। हिन्दी लिट्स रोचक मंत्रणा, चक्रव्यूह, जश्न ए मौसिकी, हल्का फुल्का,कुछ ना कहो,ब्लफ मास्टर जैसी उल्लेखनीय प्रतिस्पर्धाओं का संकलन हैं। हर साल दक्षिण भारत के विभिन्न कालेजों से हजारों बच्चे इसमें भाग लेने आते हैं। यह छात्रों को अपनी प्रतिभा परखने तथा दर्शाने का अनोखा अवसर प्रदान करता हैं।

डांडिया गुजरात का पारंपरिक लोक नृत्य हैं। यह एक सरल ,रोचक ,एंव रमणीय नृत्य रुप हैं। संस्थान परिसर में डांडिया का आयोजन नवरात्रि पर्व को मनाने के उद्देश्य से किया जाता हैं। इस उत्सव की शुरुआत एक पूजा से होती हैं। जिसका आयोजन सुबह होता है। सभी उपस्थित भक्तों में प्रसाद बाँटा जाता हैं। शाम को हजारों की संख्या में लोग डांडिया गीतों की मधुर धुन पर नृत्य करते हैं। हर प्रांत के बच्चे इसमें हिस्सा लेते हैं। यह छात्रों के लोकप्रिय पर्वों में से एक हैं।

हिन्दी लर्निंग कलासेज

आज दक्षिण भारत में हिन्दी सीखने की उमंग है।संस्थान परिसर में लोगों ने हिन्दी सीखने के महत्व को पहचाना है।हिन्दी को कालेज में जन जन तक पहुँचाने के लिए हिन्दी लर्निंग कलासेज का आयोजन किया जाता है।इसमें हर वर्ष करीब १०० प्राध्यापक एवं छात्र भाग लेते हैं।यह एक ऐसा पाठ्यक्रम है, जिसमें एक बुनियादी स्तर से हिन्दी सीखने की शुरुआत की जाती है।१५‍ से २० घंटे के इस पाठ्यक्रम को इस तरह संरचित किया गया है जिससे हिन्दी सीखने की प्रक्रिया सभी के लिए सुलभ हो। सभी प्रतिभागियों के बालने,पढ़ने तथा लेखन कौशल पर विशेष ध्यान दिया जाता है।सभी छात्रों के लिए यह हिन्दी सीखने का सुनहरा मौका है।

आयाम राष्ट्रीय प्रौद्यौगिकी संस्थान तिरुचिरापल्ली का हिन्दी साहित्यिक और सांस्कृतिक समूह है। यह समूह सम्पूर्ण दक्षिण भारत में अपनी तरह का सबसे पहला कक्ष था। दक्षिण भारत में हिन्दी भाषी लोगों की संख्या कम है। ऐसे वातावरण में हिन्दी का विकास तभी संभव है जब युवा पीढ़ी इस जिम्मेदारी को समझे और खुद इस पहल को अपने कंधो पे ले। फलस्वरप कुछ छात्रो नें आयाम की स्थापना वर्ष २००६ में की थी। तब से लेकर आजतक आयाम ने न केवल कॉलेज के कोने‍ कोने में हिंदी का प्रचार प्रसार किया है अपितु इसके प्रति लोगो में प्रेम और सम्मान को जगाया हैं। आज एन.आई.टी.टी. में सभी आंतरिक प्रशासनिक पत्राचार में हिन्दी का उपयोग किया जाता हैं। संस्थान परिसर में जगह जगह तिरक्कुरल के हिन्दी अनुवाद लगाये गये हैं।

यह छात्रों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के एक नहीं अनेक अवसर देता हैं। प्रतिवर्ष आयाम हिन्दी सप्ताह "उमंग" का आयोजन कराता हैं। फेस्टम्बर (Festember) तथा निटफेस्ट (NittFest) में हिन्दी की कई सारी स्पर्धाएँ कराई जाती हैं। आज हिन्दी लर्निंग क्लासेज के माध्यम से कई प्राध्यापको एंव छात्रों ने हिन्दी की सरलता को पहचाना हैं तथा हिन्दी को अपने जीवन का एक हिस्सा बनाया हैं। आयाम द्वारा आयोजित "होली हंगामा" तथा "डांडिया नाईट" जैसे सांस्कृतिक कार्यकमों का लोगों को बेसब्री से इन्तजार रहता हैं।

आज आयाम अपनी सक्रियता को कॉलेज की सीमाओं के पार ले जा रहा हैं। आयाम उभरते हुये कलाकारों को ऐसा मंच प्रदान कर रहा है,जहाँ वो सीखे,बढे और अपने देश की सांस्कृतिक संपत्ति को बढाने में अपना योगदान दें।